संरक्षक की कलम से

प्रिय पाठकों,

मुझे यह कहते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा अपने सरकारी काम-काज में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को समुचित बढ़ावा देने के दृष्टिकोण से वर्ष-भर हिंदी की विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करता रहता है। इन्हीं गतिविधियों को और मजबूती प्रदान करने में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यद्यपि, हमारे संस्थान की कार्य संस्कृति तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति की है और सामान्यतः इन वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों में हिन्दी का अपेक्षानुरूप प्रयोग कर पाना काफी कठिन होता है, तथापि संस्थान अपने वैज्ञानिक क्रिया-कलापों में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के लिए प्रतिबद्ध है। संस्थान का यह प्रयास रहता है कि प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के जरिए न केवल प्रशासनिक अपितु तकनीकी प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

संस्थान पिछले 18-19 वर्षों से ''प्रवाहिनी'' नामक वार्षिक हिन्दी पत्रिका का निरन्तर प्रकाशन करता आ रहा है। विद्वत लेखकों के प्रेरणाप्रद लेख हमें इस दिशा में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यद्यपि आज मनोरंजन एवं ज्ञान-विज्ञान के नए-नए साधनों ने आम-आदमी का ध्यान पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों से हटा दिया हैं, फिर भी हमारी यह कोशिश है कि सामान्य जनमानस को रोचक पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन की ओर आकर्षित व प्रोत्साहित किया जाए।

आज हमारे समाज में हर जगह जल संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं। कहीं सूखा तो कहीं बाढ़, कहीं गुणवत्ता में कमी तो कहीं जलजनित रोगों में वृद्धि पाई जा रही है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हमारे संस्थान ने निर्णय लिया है कि एक ऐसी पत्रिका प्रकाशित की जाए जिसमें जल से जुड़ी समस्याओं और उनके समाधानों की जानकारियों को समाविष्ट कर इसे आम आदमी तक पहुंचाया जाए। अतः संस्थान ने गत वर्ष यह निर्णय लिया कि ''प्रवाहिनी'' पत्रिका के प्रकाशन के साथ-साथ हिन्दी में एक और ऐसी पत्रिका प्रकाशित की जाए जिसमें जल संबंधी तकनीकी जानकारी, समीक्षाएं, समाचार, वर्ग पहेली आदि का समुचित समावेश हो, जिससे तकनीकी एवं वैज्ञानिक कार्यों में भी राजभाषा हिन्दी को व्यापक प्रोत्साहन मिल सके। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने सितम्बर 2011 में पाठकों की प्रतिक्रियाओं को जानने के लिए ''जल चेतना'' नामक इस पत्रिका के परिचयात्मक संस्करण का प्रकाशन किया। पाठकों के सकारात्मक रुझान को देखते हुए संस्थान हर वर्ष इस पत्रिका के दो अंक प्रकाशित कर रहा है।

''जल चेतना'' पत्रिका के इस अंक को समस्त सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। आशा है कि यह अंक समस्त पाठकों को रूचिकर तथा उपयोगी लगेगा।

मैं उन समस्त प्रबुद्ध लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका में प्रकाशनार्थ अपने रोचक एवं महत्वपूर्ण लेख भेजकर इसके प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग दिया है। पत्रिका का सम्पादन मंडल भी हार्दिक बधाई का पात्र है।

मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

राजदेव सिंह

(राजदेव सिंह)

निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

National Institute of Hydrology

(जल संसाधन मंत्रालय के अधीन भारत सरकार की समिति)

(Government of India Society under Ministry of Water Resources)

जलविज्ञान भवन

Jalvigyan Bhawan

रुड़की – 247 667, भारत

Roorkee - 247 667, INDIA